Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

हिन्दी-साहित्य के 'आधुनिक-काल' में 'राष्ट्रीय-भक्ति भावना': एक अध्ययन

Dr. Okendra*

PhD Hindi Literature, Department of Hindi, Uttarakhand

सारांश – *'संस्कृत-साहित्य' में 'राष्ट्रीय भक्ति-भावना' की उत्पत्ति का विस्तृत विवरण वेदों में ब्याप्त है वहीं 'आधुनिक हिन्दी गद्य-साहित्य' में 'राष्ट्रीयता की भावना' की उत्पत्ति का सम्पूर्ण विवरण 'आधुनिक-काल' की विभिन्न रचनाओं, काव्यों, लेखों इत्यादि में मिलता हैं। जो हमारी 'राष्ट्रीयभावना' को विभिन्न 'गद्य-काव्यों' में संजोये हुए है। अतः हम कह सकते हैं कि 'राष्ट्रीयभावना', 'वैदिक-काल' से लेकर 'आधुनिक-काल' तक के विभिन्न साहित्यों, वैदिक काव्य-ग्रन्थों, महाकाव्यों, वेदों इत्यादि में राष्ट्रीय-एकता, राष्ट्रीय भक्ति-भावना के संदर्भों का पर्याप्त विवरण मिलता है।*

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का अध्ययन एवं अनुशीलन वर्तमान तथा पूर्व के युग की राजनीतिक, सामाजिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि इत्यादि का एक संक्षिप्त सर्वेक्षण, अध्ययन आवश्यक है क्योंकि युगविशेष का साहित्य जहाँ पूर्ववर्ती साहित्य से जुड़ा है वहीं समसामयिक वातावरण और रचनाओं की प्रवृत्तियों का भी उस पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है।

आधुनिक हिन्दी-साहित्य के 'आधुनिक-काल' में राजनीतिक द्रष्टि से इस युग में महात्मा गांधी जी का नेतृत्व जनता को सत्य, अहिंसा, और असहयोग के माध्यम से स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रेरणा एवं शक्ति प्रदान करता है, जिसका उल्लेख हिन्दी-साहित्य के विभिन्न साहित्यकारों के द्वारा अपनी "राष्ट्रीय भक्ति-भावना," देशप्रेम की विभिन्न रचनाओं एवं साहित्यिक कृतियों में किया गया है।

कूट शब्द – *"राष्ट्रीयता की भक्ति-भावना, राष्ट्रीयता, सामाजिक चेतना, भक्ति-भावना, श्रृंगारिकता, प्रकृति-चित्रण, हास्य-व्यंग्य, रीति-निरूपण, समस्यापूर्ति, काव्यानुवाद, कलापक्ष"*

----------X----------

हिन्दी-साहित्य में राष्ट्रीय भक्ति-भावना: एक परिचय

राष्ट्रीय-एकता एक मनोवैज्ञानिक भावना है जो प्रत्येक राष्ट्र के निवासियों में पायी जाती है। एक पृथक राष्ट्र की प्रबल भावना ही "राष्ट्रीय भक्ति-भावना" कहलाती है। 'राष्ट्र' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'नेशन' शब्द का ही हिन्दी रूपान्तरण है तथा 'नेशन' शब्द लैटिन भाषा के 'नेशियो' शब्द से बना है जिसका तात्पर्य 'जन्म' और 'जाति' से होता है। वर्तमान युग में राष्ट्रीयता की भावना का तात्पर्य केवल 'जन्म' या 'जाति' के सम्बन्ध में निकटता की भावना से ही नहीं होता। राष्ट्रीयता की भावना एक मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक वह भावना है जिसके लिए अनेक तत्व उत्तरदायी होते हैं।

समान जाति, समान

धर्म, समान भाषा तथा समान संस्कृति का होना आदि कुछ ऐसे तत्व हैं जो व्यक्तियों में राष्ट्रीयता की भावना या अपने राष्ट्र के प्रति अपनत्व की भावना, अपने राष्ट्र के प्रति भक्ति-भावना को जागृत करते हैं।

अतः शोधार्थी अनुसार कह सकते हैं कि राष्ट्रीयता की भावना हृदयों की वह ऐकता है जो एक बार बनने के बाद कभी खण्डित नहीं होती है। हमारे देश में राष्ट्रीय-भावना का विस्तृत विवरण हमें आनादिकाल से विभिन्न वैदिक ग्रन्थों में अनवरत प्राप्त होता है। वैदिक-काल से लेकर वर्तमान में आधुनिक-काल तक राष्ट्रीय-एकता एवं राष्ट्रीयता की भावना का विवरण हमें विभिन्न साहित्यक ग्रंथों, वेदों पुराणों

www.ignited.in

इत्यादि में उल्लखित मिलता है। प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा हिन्दी-साहित्य के आधुनिक काल का परिचय सहित आधुनिक-काल की विभिन्न हिन्दी-साहित्यक कथाओं, रचनाओं, कृतियों इत्यादि में राष्ट्रीयता की भावना के विवरण का अध्ययन किया हैं।[29]

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का आरम्भ:

'हिन्दी-साहित्य' के आरम्भ का प्रश्न हिन्दी भाषा के आरम्भ से जुड़ा हुआ है। "हिन्दी" जिस भाशा-धारा के विशिष्ट दैशिक और कालिक रूप का नाम है, भारत में उसका प्राचीनतम रूप "संस्कृत" है। 'संस्कृत' का काल लगभग 500 ई. पूर्व से 1500 ई. पूर्व तक माना जाता है। इस काल में 'संस्कृत' बोलचाल की भाषा थी। 'संस्कृत' बोलचाल की भाषा का ही शिष्ट और मानक रूप "संस्कृत-वांड्डमय" में प्रयुक्त हुआ है। 'संस्कृत' भाषा के भी दो रूप मिलते हैं, एक भाशा 'वैदिक-संस्कृत' है, जिसमें "वैदिक वांड्डमय" की रचना हुई है तथा दूसरी लौकिक या परम्परागत संस्कृत है जिसमें वाल्मिकी, व्यास, भास, अश्वघोष, कालिदास, माध आदि की रचनाएँ हैं। इस संस्कृत-काल के अन्त तक मानक तथा परिनिश्ठित भाषा एक ही थी, किन्तु तीन क्षेत्रीय बोलियाँ विकसित हो चली थीं। जिन्हें पश्चिमोत्तरी, मध्यदेशी, तथा पूर्वी नाम से अभिहित किया जा सकता है।

संस्कृत-कालीन बो लचाल की भाषा विकसित होते-होते 500 ई. पूर्व के बाद प्रवृत्तितः काफी बदल गयी, जिसे "पाली" की संज्ञा दी गयी। इसका विकास काल 500 ई. पूर्व से पहली इसवीं तक है। बौद्ध ग्रंथों में 'पाली' का जो स्वरूप मिलता है वह इस बोलचाल की भाषा का ही शिष्ट और मानक रूप है। इस काल में क्षेत्रीय बोलियों की संख्या चार हो गयी थी, पश्चिमोत्तरी, मध्यदेशी, पूर्वी और दक्षिणी।[30]

'हिन्दी-साहित्य' का आरम्भ, हिन्दी भाषा का विकास एक 'जनभाषा' के रूप में हुआ है। कोई भी जनभाषा अपने प्रवाह की अखुर्णता में सदा एक रूप में नहीं रह सकती है। स्थान और काल के भेद से उसमें रूप-भेद स्वतः ही उत्पन्न हो जाता है, किन्तु उन रूपों की तात्विक समानता सुरक्षित रहती है तब तक वे एक भाषा का बोध कराते हैं। हिन्दी भाषा भी स्थान और काल के भेद से अपनी दीर्घ यात्रा में अनेक रूप धारण किये हैं। मगही, मैथिली, भोजपुरी, अवधी, कन्नौजी, बघे लखड़ी, बुन्दे लखण्डी, ब्रज, खड़ी-बोली, बांगरू, मेवाती, हाड़ौती, मारवाड़ी, ढूंढारी, मालवी, भीली, खनदेशी, पहाड़ी, आदि उसके अनेक रूप-भेद पाये जाते हैं किन्तु इन सब में तात्विक समानता विद्यमान है। आजकल इन भाषाओं को स्थान-भेद से स्मरण किया जाता है। किन्तु कालभेद से ही इन रूपों में अन्तर है। कुछ शताब्दियों पूर्व का ब्रज या मैथिली रूप आज यथावत् नहीं मिलता, किन्तु तात्विक समानता के आधार पर पूर्व काल के वे रूप भी ब्रज या मैथिली के ही रूप माने जाते हैं और उन सब रूपों में रचित साहित्य भी हिन्दी का ही साहित्य कहा जाता है।[31] इस प्रकार लेखक डॉ. नगेन्द्र एवं डॉ. हरदयाल कृत हिन्दी साहित्य के इतिहास को मुख्यतः चार भागों में निम्नानूसार विभक्त किया जा सकता है-

1- आदिकाल अथवा वीरगाथा काल, लगभग (700-1400ई. के मध्य तक)।

2- भक्तिकाल अथवा पूर्व-मध्य काल, लगभग (1400-1700ई. के मध्य तक)।

3- रीतिकाल अथवा उत्तर मध्य काल, लगभग (1700-1900ई. के मध्य तक)।

4- आधुनिक काल अथवा गद्य विकास काल सन् लगभग 1900 ई. से वर्त मान तक है।

हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. नगेन्द्र के अनुसार, पृ.सं.-41)

आधुनिक काल को पुनः निम्नांकित चार भागों में विभक्त किया जा सकता है-

1- पुर्नजागरणकाल (भारतेन्दु काल) - 1857-1900 ई.,

2- जागरणसुधारकाल (द्विवेदीकाल) - 1900-1918 ई.,

3- छायावादकाल - 1918-1938 ई0,

4- छायातादोत्तरकाल

क. प्रगति-प्रयोगकाल - 1938-1953 ई0,

ख. नवलेखनकाल - 1953 ई. से अब तक.....[32]

[29] डॉ. कुलश्रेष्ठ सुभाषचन्द्र, नागरिकशास्त्र, मीतल बुक डिपो मथुरा, पृ.सं.-264

[30] हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. नगेन्द्र के अनुसार पृ.सं.-41

[31]

[32] हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. नगेन्द्र के अनुसार, पृ.सं.-41

आधुनिक हिन्दी-साहित्य में 'राष्ट्रीयता की भावना':

'वैदिक' संस्कृत-साहित्य ही नहीं भारतीय "आधुनिक हिन्दी-साहित्य" में भी देशप्रेम, राष्ट्रीय-भावना, राष्ट्रीय-एकता हिन्दी गद्य साहित्य की विभिन्न रचनाओं, काव्यों में देखने को मिलती है। जिसमें भारतेन्दु युगीन कवियों का काव्यफलक अत्यन्त विस्तृत है। उनकी रचनाएँ-प्रवृत्तियाँ एक ओर भक्तिकाल और रीतिकाल से अनुबद्ध है, तो दू सरी ओर समकालीन परिवेष के प्रति जागरूकता का भी उनमें अभाव नहीं है। प्रवृत्तिमूलक विश्लेषण के लिए उनके कत्तव्य पर शोधार्थी के अनुसार इन शीर्षकों के अंतर्गत मूल्यांकन कर विचार करना उचित होगा-[33]

"राष्ट्रीयता की भक्ति-भावना, राष्ट्रीयता, सामाजिक चेतना, भक्ति-भावना, श्रृंगारिकता, प्रकृति-चित्रण, हास्य-व्यंग्य, रीति-निरूपण, समस्यापूर्ति, काव्यानुवाद, कलापक्ष" इत्यादि।

भारतीय वीरों में प्रताप, छत्रसाल, शिवाजी आदि ने विशिष्ट क्षेत्र (चित्तौड़, बुन्देलखण्ड, और महाराष्ट्र) की रक्षा के लिए जिस तत्परता और दृढ़ता का परिचय दिया था, उसका स्तवन करने वाले भूषण प्रभृति कवि क्षेत्रीय भावना अर्थात संकीर्ण राष्ट्रीयता से ऊपर नहीं उठ सके थे। भारतेन्दु युगीन कवियों ने भारतीय इतिहास के गौरवशाली प्रष्ठों की स्मृति तो अनेक बार दिलायी, पर उनकी 'राष्ट्रीयता की भावना' केवल यहीं तक सीमित नहीं रही। अंग्रेजों की विचारधारा और उनकी 'देशभक्तिपूर्ण' कविताओं से भी उन्होंने यथेष्ट प्रेरणा ली, जिसका फल यह हुआ कि क्षेत्रीयता से ऊपर उठकर वे सम्पूर्ण "राष्ट्र" की नब्ज को टटोलने लगे। 'हमारो उत्तम भारत देश '(राधाचरण गोस्वामी) और 'धन्य भूमि भारत सब उतननि की उपजाबनि' (प्रेमघन) आदि काव्य पंक्तियाँ इसी तथ्य को प्रकट करती हैं। देश के उत्कृष्ट-अपकर्ष के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों पर प्रकाश डाल कर इस युग के कवियों में जनमानस में 'राष्ट्रीयता की भावना' के बीज-प्रवल्लित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। 'देशभक्ति' की 'राष्ट्रीयता की भावना' बाद में मैथिलिशरण गुप्त-कृत "भारत-भारती" में लक्षित हुई। अंग्रेजों की शोषण-नीति का भारतेन्दु द्वारा प्रत्यक्ष उल्लेख शोधार्थीनुसार, निम्नानुसार 'राष्ट्रीयता की भक्ति-भावना' का ही द्योत्तक है-

भीतर-भीतर सब रस चूसै, हँसि-हँसि के तन-मन-धन मूसै।

ज़ाहिर बातन में अति त़ेज, क्यों सखि सज्ज़न! नहिं अंग्रेज।।

प्रेमघन ने 'हार्दिक हर्षादर्श' कविता में इस स्वार्थपूर्ण षासन-प्रक्रिया के लिए भी 'ईस्ट-इण्डिया कम्पनी' को दोषी ठहराया है।

अन्यथा उससे शासनाधिकार लेने वाली महारानी विक्टोरिया के विषय में तो उन्हों ने मत व्यक्त किया है-

"किय सनाथ भो ली भारत की प्रजा अनाथन"

शोधार्थीनुसार, वास्तव में भारतेन्दु-युग की राष्ट्रीय भावना की चिंतनधारा के दो पक्ष हैं- देशप्रेम और राजभक्ति।

प्रथम पक्ष के अंतर्गत उन्होंने "हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान" का गुणगान किया, तो दूसरे पक्ष में ज़जिया जैसा कर न लगाने वाले अंग्रेजों के शासन-काल में प्रजा मात्र की सुख-समृद्धि की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। इसी वर्ग की 'राजभक्तिपरक' एवं 'राष्ट्रीयभावनात्मक' कविताओं में भारतेन्दु की 'भारतभिक्षा', 'विजयवल्लरी', और 'रिपनाष्टक', प्रेमघन की 'हार्दिक हर्षादर्शा' और 'स्वागत' तथा राधाकृष्णदास की 'मक्डानल्ड पुष्पांजलि', 'जुबिली', और 'विजययिनी-विलाप' उल्लेखनीय है।

प्रेमघन ने कहा-

"राजभक्ति भारत सरिस और ठौर कहुं नाहिं"

प्रेमघन ने उक्त पंक्ति कहकर विदेशी शासकों को आश्वस्त किया, तो अम्बिकादत्त व्यास ने अधोलिखित पंक्ति कहकर

विक्टोरिया के सुषासन के प्रति आभार प्रकट किया-

"जयति राजराजेश्वरी जय जय परमेश"

द्विवेदीकालीन काव्यों में "राष्ट्रीयता की भावना":

द्विवेदी-युग से पूर्व कविता के क्षेत्र में मुख्यतः श्रृंगार, भगवतद्भक्ति एवं देशभक्ति की धाराएँ प्रवाहित थीं। बढ़ती हुई राजनीतिक चेतना तथा सां स्कृतिक पुनरूत्थान के परिणामस्वरूप 'राष्ट्रीयता' में 'राष्ट्रीयता की भावना' द्विवेदी युग की प्रधान भावधारा थी। अतः तत्कालीन कविता का मुख्य स्वर भी देशभक्ति के अनुरूप 'राष्ट्रीयता की भावना' ही है। इस युग के प्रायः सभी कवियों ने 'देशभक्तिपूर्ण' कविताओं का प्रणयन किया। उन्होंने पराधीनता को भारतवर्ष का सबसे बड़ा अभिशाप माना है तथा स्वतंत्रताप्राप्ति के लिए

[33] डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ.सं.-440

राष्ट्रीय-जन-क्रान्ति एवं आत्मो सर्ग की प्रेरणा दी है। कविवर 'शंकर' जी ने अपने बलिदान-गान में निम्नवत कहा था-[34]

देशभक्त वीरों, मरने से नेक नहीं डरना होगा

प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।

(शंकर-सर्वस्त्र)

मैथिलीशरण गुप्त जी ने अपने देश के प्रति 'राष्ट्रीयभावना' की ओजस्वी हुंकार निम्नलिखित शब्दों में प्रकट की है-

धरती हिल कर नींद भगा दे

वज्रनाद से व्योम जगा दे

दैव, और कुछ लाग लगा ऋदे।

(स्वदेश-संगीत)

शोधार्थीनुसार, रामनरेश त्रिपाठी जी ने अपने खण्डकाव्यों में परोक्ष रूप से स्वतन्त्रता एवं 'राष्ट्रीय-भावना' के बन्धन काटने का संदेश देते हैं। इसी प्रकार अनेक कविताओं में पशुबल की अवहेलना करते हुए निर्भयतापूर्वक स्वतन्त्रता के मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा दी गयी है।

अतः वस्तुतः शोधार्थी नुसार, द्विवेदीयुगीन कवियों ने बड़ी श्रद्धा और भक्ति से अतीत के गौरव का गान करते हुए देश की वर्तमान दशा पर क्षोभ प्रकट किया है। इस प्रकार की रचनाओं में गुप्त जी की 'भारत-भारती' सर्वश्रेष्ठ और सशक्त रचना है। और कितने विश्वास के साथ भारत-भारतीकार, 'राष्ट्रीयभावना' के तहत भारतवर्ष की श्रेष्ठता का गुणगान करता है-

भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?

फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।

सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है

उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।।

देश की हीन दशा-धैर्य, गांभीर्य, शौर्य तथा कला-कौशल के अभाव पर भी कवियों ने क्षोभ व्यक्त किया है। ठाकुर गोपालशरण सिंह की प्रस्तुत निम्नांकित पंक्तियाँ शोधार्थीनुसार, उदाहरण के लिए उल्लखित हैं-

वह धीरता कहाँ है गम्भीरता कहाँ है ?

वह वीरता हमारी है वह कहाँ बड़ाई?

क्या हो गयीं कलाएँ कौशल सभी हमारे ?

किसने शताब्दियों की ली छीन सब कमाई?

आलस, फूट, खुदगर्ज़ी, मिथ्या, कुलीनता आदि अभिषापों की ओर भी इस युग के कवियों की द्रष्टि गयी है। राय

देवीप्रसाद 'पूर्ण' ने इसका निम्नवत उल्लेख, इनके निराकरण की कामना से किया है-

भारतखण्ड का हाल ज़रा देखो है कैसा।

टालस का जंजाल ज़रा देखो है कैसा।।

ज़रा फूट की दशा खोल कर आँखें देखो ।

ख़ुदगर्ज़ी का नशा खोलकर आँखें देखो ।।

है शेखी दौलत की कहीं, बल का कहीं गुमान है।

है खानदान की मद कहीं, कहीं नाम का ध्यान है ।।

देश की आर्थिक विपन्नता, सामाजिक कुरीतियों, रूढ़-प्रथाओं इत्यादि के प्रयोग तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार पर उन्होंने निरन्तर बल दिया। मातृभूमि की महिमा का गान भी 'देशभक्ति' एवं 'राष्ट्रीयएकता' का ही अंग है, जिसकी ओर हिन्दी गद्य साहित्य के अनेकों कवियों ने आग्रहपूर्वक ध्यान दिया है।

हिन्दी-साहित्य में "विभिन्न रचनाकारों की रचनाओं में "राष्ट्रीयता की भावना":

विवेच्य-काल भारतीय जीवन के लिए विशम संघर्ष का समय था। चूँकि देश ऐसे साम्राज्यवदियों के चंगुल में फंसा था कि जिनकी शासन-पद्धति प्राचीन काल के विदेशियों से मुख्यतः भिन्न थी। अंग्रेजों से पहले जितने भी विदेशी आक्रमणकारी यहाँ आये वे या तो लूटमार करके वापस चले गये या वे हमारे देश में ही रहकर हमारे देश के हो गये। निःसंदेह वे अपने वर्ग या धर्म पर आस्था रखने वालों को अधिक सुविधाएँ देते थे और दूसरे धर्मों के लोगों को वैसी समानता का अधिकार नहीं मिल पाता था, फिर भी वे इस देष में रहते हुए किसी दूसरे देश

[34] डॉ. नगेन्द्र एवं डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प.सं.-477

www.ignited.in

के हित की बात नहीं सोचते थे। इसके विपरीत अंग्रेज शासक यहाँ रहते हुए भी यहाँ के निवासी नहीं बन सके।[35]

उनका प्रमुख उद्देश्य था कि- "भारतवर्ष का शोषण करके अपने देश की श्रीवृद्धि करना" इसलिए शोधार्थी के अनुसार, उनके प्रति आक्रोश होना स्वाभाविक ही था यह आक्रोश धीरे-धीरे बढ़ता हुआ स्वाधीनता-संग्राम के रूप में फूट पड़ा और महात्मा गाँधी के नेतृत्व में स्वाधीनता-संग्राम के रूप में तथा बाद में नये रूप में-अहिंसा और सत्य पर आधारित असहयोग आन्दोलन के रूप में हमारे सामने आया। तथा इस युग की "राष्ट्रीय-सांस्कृतिक" काव्य में दो भावनाएं पूरी शक्ति के साथ व्यक्त हुई- एक और तो कवियों भारत की आन्तरिक विसंगतियों और विषमताओं को दूर करने के लिए देश का आह्नान किया, और दूसरी ओर जनता को विदेशी शासन से मुक्ति पाने के लिए "स्वाधीनता-संग्राम" में कूद पड़ने की प्रेरण दी। "माखनलाल चतुर्वेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और सुभद्राकुमारी चौहान" ने केवल राष्ट्रप्रेम को ही मुखरित नहीं किया, अपितु उन्हों ने स्वयं देश की आजादी की लड़ाई में भाग भी लिया। फलस्वरूप शोधार्थीनुसार, उनकी देशप्रेम की कविताओं में अनुभूति की सच्चाई और आवेश दिखायी देता है। उदाहरणार्थ, माखनचतुर्वेदी चतुर्वेदी ने 'कैदी और कोकिला' शीर्षक कविता में अपनी अनुभूति को ही एक उच्चतर और लोकसामान्य भावभूमि के स्तर पर व्यक्त करने का प्रयास किया है:[36]

क्या? देख न सकती ज़ंजीरों का गहना?

हथकड़ियां क्या? यह ब्रिटिश राज्य का गहना,

कोल्हू का चर्रक चूं? जीवन की तान,

गिट्टी पर लिक्खे अंगुलियों ने गान?

हूं मोट खींचता लगा पेट पर जूआ,

ख़ाली करता हूं ब्रिटिश अकड़ का कूआं।

उपरोक्त इन पंक्तियों में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरोधी किसी भी ऐसे व्यक्ति की आवाज सुनी जा सकती है, जिसे आजादी के लिए संघर्श करने के जुर्म में कैद किया गया हो। इस काल में देश के सर्वमान्य नेता थे- महात्मा गांधी। इसलिए स्वाभाविक ही है कि आजादी के भावों से भरी कविता में गाँधीदर्शन का गंभीर प्रभाव दिखायी दे। स्वाधीनता-संग्राम के प्रेरक मूल्य थे- "सत्य और अहिंसा" इनके साथ ही गाँधीदर्शन में सामान्य जनता की समूह-शक्ति के उपयोग का प्र यास दिखाई देता है। युगों से षोशित भारतीय जनता को विज्ञान से प्राप्त नये साधनों से युक्त ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के साथा संघर्श के भावों का संचार करने के लिए कवियों ने जनता को मुख्य रूप से यह बाताया कि प्रत्येक व्यक्ति आसीम अक्षय-शक्ति का स्रोत है, आवश्यकता इस बात की है कि वह इसे पहचाने और आत्मविश्वास के साथ संघर्ष के लिए तैयार हो जाये। 'नवीन' ने इन पंक्तियों में 'चिरदोहित' और 'भिखमंगे' भारत को जगाने का प्रयास निम्नवत किया है-[37]

ओ भिखमंगे, अरे पराजित, ओ मज़लूम, अरे चिरदोहित,

तू अखण्ड भण्डार शक्ति का, जाग अरे निद्रा-सम्मोहित!

प्राणों को तड़पाने वाली हुंकारों से जल-थल भर दे,

अंगारों के अंबारो में अपना ज्वलित पलीता घर दे।

अतः शोधार्थी के अनुसार, जनता में आत्मविश्वास का संचार करने का दूसरा उपाय था- 'अतीत की गरिमा का सजीव चित्रण।' आज का भारत इतना विकसित हो जाने पर भी अपनी प्राचीन वैदिक परम्परा से जुड़ा हुआ है। इसके अनेक कारण दिये जाते हैं, किन्तु प्रधान कारण यह है- मूल भारतीय जीवन-दृष्टि में दुराग्रह का अभाव, जिसके कारण वह युगानुरूप् अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं का संशोधन परिवर्धन करती रही है। 'आधुनिक-काल' में भी यह प्रयास बड़े व्यापक पैमाने पर हुआ है। धर्मसमाज, आर्यसमाज, प्रार्थ नासमाज, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, अरविंद, महात्मा गांधी, आदि ने प्राचीन सिद्धान्तों को ही ग्रहण किया है और उनकी युगानुरूप नयी व्याख्याएँ कीं। यह सारा प्रयास वास्तव में प्राचीन भारतीय परम्परा में उन मुल्यों की खोज का प्रयास है, जो आज के युग-जीवन के लिए भी सार्थक और उपयोगी हो सकें। छायावादी कवियों ने भी भगवान श्री राम, कृष्ण, भीम, अर्जुन, हरिश्चंद्र, आदि प्राचीन युगपुरूषों के चरित्रों के उदाहरण देकर जनता में विश्वास और आस्था उत्पन्न करने का प्रयत्न किया है।[38]

सियारामशरण गुप्त जी की 'बापू' कविता की ये पंक्तियाँ उदाहरणार्थ हैं-

[35] हिन्दी साहित्य का आधुनिक इतिहास डॉ. तारकानाथ बाली पृ.सं.-247
[36] हिन्दी साहित्य का आधुनिक इतिहास डॉ. तारकानाथ बाली पृ.सं.-247
[37] हिन्दी साहित्य का आधुनिक इतिहास डॉ. तारकानाथ बाली पृ.सं.-247, 248
[38] हिन्दी साहित्य का आधुनिक इतिहास डॉ. तारकानाथ बाली पृ.सं.-248,249

प्राप्त इसे दूर के अतल से

सत्य हरीशचन्द्र की अटकलता,

लब्ध इसे ताराग्रह मण्डल से

श्री प्रहलाद की अनन्त भक्ति-समुज्वलता,

क्रुद्ध कुरूक्षेत्र के समर में

साधा है अकाम ज्ञान कर्मयोग इसने

पुण्यरत पांचजन्य स्वर में

जीवन का पाया है अमर योग इसने।

निराला जी ने भी 'हिन्दी' कविता में देश के अतीत और गौरव के साथ वर्तमान दुर्दशा का चित्रण कर एक गम्भीर प्रभाव की अभिव्यक्ति की है-[39]

क्या यह वही देश है-

भीमार्जुन आदि का कीर्तिक्षेत्र

चिरकुमार भीष्म की पताका ब्रह्मचर्य-दीप्त

उड़ती है आज भी जहाँ के वायुमण्डल में

उज्वल अधीर और चिरनवीन?-

श्रीमुख से कृष्ण के सुना था जहाँ भारत ने

गीता गीत-सिंहनाद-

मर्मवाणी जीवन संग्राम की-

सार्थक समन्वय ज्ञान-कर्म-भक्ति-योग का?

शोधार्थी के अनुसार प्रत्येक कवि एक एतिहासिक कालखण्ड का दवाब लेकर जन्म लेता है[40]

देश काल के शर से बिंध कर,

यह जागा कवि अशेष छवि धर।

आलोच्य धारा की कई रचनाओं में प्रत्यक्ष रूप से देश की राष्ट्रीयभावना में स्वाधीनता की मांग का, 'होमरूल' का समर्थन किया गया है। हमारा देश किसी और का अधिकार नहीं छीनना चाहता, हम तो केवल स्वराज्य-अपने देश के वर्तमान और भविष्य को बनाने का अधिकार-चहाते हैं। शोधार्थीनुसार, रामनरेश त्रिपाठी जी ने अपने युग की इस आकांक्षा को निम्नानुसार स्पष्ट रूप में व्यक्त किया है-

करेंगे क्या लेकर अपवर्ग, हमारा भारत ही सुख-स्वर्ग।

नहीं है किसी लक्ष्य पर ध्यान, चाहिए केवल स्वत्व समान।।

इसे तज कर क्या तरू निर्मूल, करेंगे लेकर किंशुक फूल।

प्रकृत पुरूषों का जीवन-मूल, चाहिए केवल घर का रूल।।

इसी तरह की रचनाओं में कवित्व की अपेक्षा उपदेश का भाव ही अधिक है। वस्तुतः जब भी कविता किसी सामाजिक माँग के समान महत्तवपूर्ण ही क्यों न हो, लेकर चलती है, तो उसके कवित्व की प्रायः हानि होती है। एक तो यह खड़ी-बोली-काव्य की आरम्भिक अवस्था थी और तब तक भाषा का पूर्ण विकास नहीं हो पाया था, और दूसरे कवियों की चेतना कविता या कविकर्म में केन्द्रित न होकर 'राष्ट्रीय-चेतना' के कारण ही है। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि "स्वाधीनता-आन्दोलन के दो महत्वपूर्ण मूल्यों-असहयोग और आत्मबलिदान-के प्रभाव स्वरूप इस धारा की अनेक रचनाओं में जनता को सरकार से असहयोग करने के लिए प्रेरित किया गया है।" स्पष्ट है कि अंग्रेज सरकार का विरोध करने पर, चाहे वह शांतिपूर्ण असहयोग ही क्यों न हो, लोगों में अंग्रेज सरकार के दमन चक्र की निरंकुशता को सहन की शक्ति हानी चाहिए। इसलिए असहयोग के साथ-साथ सहिष्णुता पर भी विषेश बल दिया गया। यदि यह शांतिपूर्ण आन्दोलन जीवन की बलि मां गता है, तो इसके लिए भी जनता को तैयार रहना चाहिए। कवियित्री सुभद्राकुमारी चौहान ने असहयोग और बलिदान के प्रेरणा देते हुए कहा है-

विजयिनी माँ के वीर सुपुत्र, पाप से असहयोग ले ठान।

गुंजा डालें स्वराज्य की तान, और सब हो जावें बलिदान।।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने भी देश के युवकों को स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर मर-मिटने के लिए प्रेरित किया जो 'राष्ट्रीयभावना' में देश-प्रेम व्यक्त करता है 'राष्ट्रीयभावना' में प्रस्तुत कुछ पंक्तियाँ निम्नवत हैं-

[39] हिन्दी साहित्य का आधुनिक इतिहास डॉ. तारकानाथ बाली पृ.सं.-249
[40] हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, डॉ. बच्चन सिंह, पृ.सं.-149

है बलिवेदी, सखे प्रज्वलित माँग रही ईंध क्षण-क्षण,

आओ युवक, लगा दो तो तुम अपने यौवन का ईंधन।

भस्मसात हो जाने दो ये प्रबल उमंगें जीवन की,

अरे सुलगने दो बलिवेदी, चढ़ने दो बलि जीवन की।।

कहीं-कहीं क्रान्ति और ध्वंस के स्वर भी सुनायी दे ते हैं। 'नवीन' जी की रचना 'कवि' कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाये' इस विषम में प्रसिद्ध है 'निराला' जी की 'आवाहन' कविता में भी ध्वंस की बात कही गयी है-

एक बार बस और नाच तू श्यामा!

समान सभी तैयार,

कितने ही असुर, चाहिए कितने तुझको हार?

कर मेखला मुंड-मालाओं से बन-बन अभिरामा-

एक बार बस और नाच तू श्यामा! भैरवी मेरी झंझा

तभी बजेगी मृत्यु लड़ाएगी जब तुझसे पंजा;

लेगी खड्ग और तू खप्पर,

उसमें रूधिर भरूँगा माँ

मैं अपनी अंजलि भर-भर...

किन्तु शोधार्थी के अनुसार यह भाव विरल की भावना ही प्रधानतः असहयोग और आत्मबलिदान के भावों की ही देश भक्ति भावना है। इस काव्यधारा की अनेक रचनाओं में मातृभूमि-प्रेम (राष्ट्रीय भावना) की महिमा का वर्णन करने के संदर्भ में उसे देवी के रूप में भी चित्रित किया गया है। 'निराला' जी ने भारतमाता का चित्र निम्नाँकित इन पंक्तियों में व्यक्त किया है-[41]

भारति, जय विजय करे,

कनक, शस्य कमल धरे।

लंका पदतल शतदल,

गर्जितोर्मि सागर जल

धोता शुचि चरण धवल

स्तव कर बहु-अर्थ भरे।

अतः शोधार्थी के अनुसार, उपरोक्तानूसार अध्ययन में हिन्दी-साहित्य जगत में वर्णित इन कवियों ने वर्तमान को अतीत से सम्बद्ध करके वर्तमान में उत्साह, और महानता, देश-भक्ति, राष्ट्रप्रेम, में राष्ट्रीयता की भावना का उद्बोध करने का प्रयास किया है। उपरोक्त संदर्भित रचनाओं के ही द्वारा ही 'आधुनिक-काल' में हिन्दी-साहित्य के विभिन्न कवियों ने जनता में अपने देश के प्रति, प्रेम-भाव और भक्ति-भाव की भावनाओं को उत्पन्न करने का प्रयास किया है ।

निष्कर्ष

'आधुनिक हिन्दी-साहित्य' में 'राष्ट्रीय भक्ति-भावना' की उत्पत्ति 'आधुनिक-काल' की विभिन्न रचनाओं, काव्यों, लेखों इत्यादि में देखने को मिलती हैं, जो हमारी 'राष्ट्रीय भक्ति-भावना' को विभिन्न 'गद्य-काव्यों' में संजोये हुए है। अतः हम कह सकते हैं कि 'राष्ट्रीय भक्ति-भावना', के विभिन्न संदर्भ हिन्दी-साहित्य में विभिन्न आधुनिक हिन्दी-काव्यों, रचनाओं इत्यादि में पर्याप्त विवरण प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार विभिन्न रचनाओं के द्वारा रचनाकारों, कवियों ने जनता में 'देश-प्रेम', 'राष्ट्रीयता की भावना', 'राष्ट्रीय-एकता' और 'राष्ट्र-भक्ति', देश-प्रेम की भावनाएँ उत्पन्न करने का प्रयास किया है। अतः स्पष्ट है कि हिन्दी-साहित्य के 'आधुनिक काल' में प्रत्येक भारतवासी का सबसे महत्वपूर्ण कार्य था- "स्वाधीनता" के लिए साधना कर "'राष्ट्रीय भक्ति-भावना" जागृत कर देश-प्रेम की भावना जागृत करना जिसमें उपर्युक्तानुसार स्पष्ट है कि आधुनिक-काल के विभिन्न रचनाकारों की राष्ट्रीय भक्ति-भावना का उत्साह उनकी विभिन्न रचनाओं में देखने को मिलता है।

संदर्भ-ग्रन्थ सूचीः

1. डॉ. कुलश्रेष्ठ सुभाष चन्द्र, नागरिकशास्त्र, मीतल बुक डिपो मथुरा, पृ.सं.-264।
2. डॉ. नागेन्द्र एवं डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, अड़तालीसवां संस्करण-2015, (पृ.सं.-20,,40,41,440,477,478)।

[41] हिन्दी साहित्य का आधुनिक इतिहास डॉ. तारकानाथ बाली पृ.सं-251

3. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रभात पेपरबैग्स नई दिल्ली, संस्कणः 2016 (पृ.सं.- 15 से 21)।

4. सिंह बचन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि., आठवाँ संस्करण-2016, (पृ.सं.- 149)।

5. डॉ. बाली तारकनाथ, हिन्दी साहित्य का आधुनिक इतिहास, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण-2017, (पृ.सं.-247,248,249,251)।

6. देखिए 'भारतेन्दु-ग्रन्थावली' भाग-2 (पृ.सं.- 203, 209, 747, 853, 855, 857, 860)।

Corresponding Author

Dr. Okendra*

PhD Hindi Literature, Department of Hindi, Uttarakhand

mr.okendra@gmail.com